DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
WORLD HISTORY
Class-2
LIVE
23-08-2024 08:00 PM

1.3.1 प्रबोधन (Enlightenment)

यूरोप में 17वीं-18वीं शताब्दी में हुए क्रांतिकारी परिवर्तनों के कारण इस काल को प्रबोधन, ज्ञानोदय अथवा विवेक का युग कहा गया और इसका आधार **पुनर्जागरण, धर्मसुधार आंदोलन व वाणिज्यिक क्रांति** ने तैयार कर दिया था। पुनर्जागरण काल में विकसित हुई वैज्ञानिक चेतना ने, तर्क और अन्वेषण की प्रवृत्ति ने 18वीं शताब्दी में परिपक्वता प्राप्त कर ली। वैज्ञानिक चिंतन की इस परिपक्व अवस्था को **'प्रबोधन'** के नाम से जाना जाता है।

रूसो, वाल्टेयर, एडम स्मिथ, इमैनुएल काण्ट, मांटेस्क्यू, जॉन लॉक जैसे विचारकों ने इसे बौद्धिक-तार्किक आधार प्रदान किया। वहीं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास के साथ साथ इसे व्यावहारिक स्वरूप मिला।

1.3.2 प्रबोधन की विशेषताएँ

- ✓ अनुभूतिमूलक ज्ञान – इंद्रियों से अनुभव होने वाला ज्ञान
- ✓ ज्ञान को विज्ञान के साथ जोड़ना – प्रयोग एवं परीक्षण पर बल
- ✓ कार्य-कारण संबंध का अध्ययन – प्रत्येक घटना (कार्य) के पीछे कोई न कोई पूर्वघटना (कारण)
- ✓ मानवतावाद – शक्ति एवं बुद्धिमता का प्रयोग मानव कल्याण के लिए करना
- ✓ देववाद – इस विश्व को किसी दैवीय शक्ति ने बनाया है परंतु संचालन की ज़िम्मेदारी इन्सानों की है
- ✓ समानता एवं स्वतंत्रता पर बल
- ✓ प्रकृति पर बल – प्रकृति का सरल रूप श्रेष्ठ > सामाजिक-आर्थिक प्रतिबंधों ने भ्रष्ट बनाया

1.3.3 प्रबोधन युग के प्रमुख विचारक

रूसो (1712-78)

- सोशल कांट्रैक्ट एवं सेकंड डिस्कोर्स रूसो की प्रमुख रचनाएँ हैं।
- प्रकृति पर बल – 'मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है, पर हर जगह वह ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ है।'
- असमानता पर चोट – रूसो ने मानव निर्मित नियंत्रण एवं असमानता (अमीर-गरीब, उच्च-निम्न, श्वेत-अश्वेत, कुलीन-सामान्य आदि) का विरोध किया
- राज्य की उत्पत्ति एवं सामान्य इच्छा का सिद्धांत (सोशल कांट्रैक्ट) – संपत्ति की अवधारणा > असुरक्षा की भावना > सामाजिक समझौता > अपनी शक्ति राज्य को सौंप दी > राज्य एवं राजतंत्र की शुरुवात (रूसो ने समानता एवं स्वतन्त्रता को सामाजिक संगठन का आधार बताया)

एडम स्मिथ (1723-1790) (स्काटिश अर्थशास्त्री)

- द वेल्थ ऑफ नेशंस (The Wealth of Nations) में मुक्त व्यापार (Laissez faire) का सिद्धान्त दिया जो मांग एवं आपूर्ति के नियमों के आधार पर चलता है।

इमैनुएल काण्ट (1724-1804) (जर्मन विचारक)

- प्रकृतिक विज्ञानों में रुचि > धर्म एवं दिव्य ज्ञान को नकारा
- व्यक्ति की स्वतन्त्रता को महत्व – व्यक्ति राज्य के नियंत्रण में नहीं है, राज्य का कार्य व्यक्ति की स्वतन्त्रता सुरक्षित रखना है।
- लोक संप्रभुता का विचार > राजनैतिक व्यवस्था के लोकतान्त्रिक होने का समर्थन।

मांटेस्क्यू (1689-1755) (फ्रांसीसी विचारक)

- देशों की परिस्थिति अनुसार सरकार : बड़े देश – निरंकुश राजतंत्र, मध्यम देश – सीमित राजतंत्र (फ्रांस) छोटे देश – गंतंत्रीय शासन प्रणाली (स्विट्जरलैंड)
- शक्ति पृथककरण का सिद्धान्त एवं नियंत्रण एवं संतुलन का सिद्धान्त (द स्पिरिट ऑफ द लॉज) > शक्ति के केन्द्रीकरण से व्यक्तिगत स्वतन्त्रता बाधित होती है।

वाल्टेयर (1694-1778) (संपादकों का राजा)

- ✓ प्रत्येक प्रकार के शोषण एवं अंधविश्वास का कटु आलोचक, आस्तिक पर चर्च का विरोधी था
- ✓ प्रसिद्ध पुस्तकें – लुई 14वें का युग, बदनाम चीजों को नष्ट कर दो

जॉन लॉक (1632-1704)

- ✓ प्रत्येक व्यक्ति को कुछ प्रकृतिक अधिकार प्राप्त हैं जैसे – जीवन, स्वतन्त्रता एवं संपत्ति का अधिकार
- ✓ सीमित संप्रभुता का सिद्धान्त - मनुष्य अपने प्रकृतिक अधिकारों की रक्षा हेतु सरकार की स्थापना की,जब सरकार अपने इस कर्तव्य से मुकर जाए तो उसे पदच्युत करने का जनता को अधिकार है।
- ✓ प्रसिद्ध पुस्तकें – एन एसे कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टैंडिंग (An essay concerning human understanding)

1.3.4 प्रबोधनयुगीन चिंतन एवं पुनर्जागरण में अंतर

आत्मविश्वास –

- पुनर्जागरणकालीन मध्यवर्ग अभी आत्मविश्वास से युक्त नहीं था अतः वह इस बात पर बल देता था कि अतीत से प्राप्त ज्ञान ही श्रेष्ठ है और बुद्धि की बात करते हुए उदाहरण के रूप में ग्रीक एवं लैटिन साहित्य पर बल देता था। जबकि प्रबोधनकालीन मध्यवर्ग में शक्ति और आत्मविश्वास आ चुका था इस कारण उसने राजतंत्र की निरंकुशता एवं चर्च के आंडबर के खिलाफ आवाज उठाई और तर्क के माध्यम से अपनी बात व्यक्त की।

ज्ञान का आधार –

✓ पुनर्जागरण का बल ज्ञान के **सैद्धांतिक पक्ष** पर अधिक था जबकि प्रबोधन चिंतन का मानना था कि **ज्ञान वही है जिसका परीक्षण किया जा सके** और जो व्यावहारिक जीवन में उपयोग में लाया जा सके। इस तरह प्रबोधकालीन चिंतन का बल **व्यवहारिक** ज्ञान पर था।

ज्ञान प्राप्ति के आधार –

✓ पुनर्जागरणकालीन वैज्ञानिक अन्वेषण **निजी प्रयास** का प्रतिफल था। दूसरी तरफ प्रबोधनकालीन वैज्ञानिक अन्वेषण तथा वैज्ञानिक क्रांति सामूहिक प्रयास का नतीजा था।

1.3.5 प्रबोधन का प्रभाव

- आधुनिक विश्व के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ।
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति ने औद्योगीकरण के नये युग का आधार तैयार किया।
- निरकुश राजतंत्र पर चोट, फलतः लोकप्रिय (लोकतन्त्र/गणतन्त्र) सरकारों की स्थापना।
- चिंतकों के द्वारा प्रतिपादित व्यक्ति स्वातंत्र्य की बात ने उदारवादी सरकार के निर्माण मार्ग का प्रशस्त किया।
- व्यक्ति स्वतंत्र पैदा हुआ है जैसे नारे और व्यक्ति की स्वतंत्रता की मांग ने आर्थिक स्वतंत्रता को प्रोत्साहित **एडम स्मिथ** के **'द वेल्थ ऑफ नेशन्स'** (1776) में प्रतिपादित **"मुक्त अर्थव्यवस्था के सिद्धान्त"** को लोकप्रियता मिली जिसे वर्तमान में काफी महत्व दिया जाता है।
- भारत में 19वीं सदी में चले सामाजिक सुधार आंदोलन पर भी इसका असर दिखाई पड़ता है।

1.3.6 प्रबोधन की सीमाएँ

- ✓ प्रबोधनकालीन प्रमुख चिंतक मध्यवर्गीय बद्धिजीवी थे। यह चिंतन बुर्जुवा विश्वदृष्टि को अभिव्यक्ति करता है। अतः वे मध्यवर्ग के हितों से परिचालित थे।
- ✓ ये बुद्धिजीवी कानून के शासन तथा विधि निर्माण पर बल देते थे परन्तु विधि निर्माण में मध्यवर्ग का ही वर्चस्व स्थापित करना चाहते थे।
- ✓ इन चिंतकों की दृष्टि कुछ हद तक "यूटोपियन" प्रतीत होती हैं क्योंकि ये भविष्य के प्रति अतिरिक्त आशावादी दिखाई देते थे।
- ✓ प्रबोधन चिंतको ने विज्ञान के संवंध में यह मत व्यक्त किया कि विज्ञान वेहतर दुनिया बना सकता है जिसमें व्यक्ति स्वतंत्रता और खुशी का आनंद उठा सकता है और विज्ञान का उपयोग मानव हित में किया जा सकता है। विज्ञान के प्रति उस विश्वास को 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध में चुनौती मिली जब विज्ञान ने और तकनीकी विकास ने हिंसा और असमानता को बढ़ावा दिया।

2.1.1 अमेरिकी क्रांति (American Revolution)

सन् 1492 ई० में कोलम्बस ने एक नई दुनिया अमेरिका तक पहुँचने के समुद्री मार्ग की खोज की। इस खोज से यूरोपीय शक्तियाँ - फ्रांसिसी, डच, स्पेनिश, अंग्रेज आदि इस महाद्वीप में उपनिवेश स्थापित करने लगे। शुरू में स्पेन सबसे आगे था। लेकिन धीरे-धीरे वहां फ्रांस और अंग्रेज ही बचे। 17वीं शताब्दी तक अंग्रेजो ने वहाँ 13 उपनिवेश स्थापित किये।

उपनिवेशों में रहनेवाले अंग्रेज स्वतंत्रता-प्रेमी थे, वे अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए मातृभूमि छोड़कर उपनिवेशों में जा बसे थे। लेकिन जब जॉर्ज तृतीय (George III of the United Kingdom) ने उपनिवेशों पर अपना निरंकुश शासन लादना चाहा तो स्वतंत्रता-प्रेमी अमेरिकी उपनिवेशवासियों ने जार्ज वाशिंगटन के नेतृत्व में एवं फ्रांसीसी सेना के सहयोग से विद्रोह कर दिया।

इंग्लैंड एवं स्पेन के मध्य 1588 ई. में भीषण नौसैनिक युद्ध में स्पेन की पराजय के पश्चात इंग्लैण्ड ने 1775 ई. तक अमेरिका में 13 ब्रिटिश उपनिवेश बसाए। इन उपनिवेशों को भौगोलिक दृष्टि से तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है-

1. उत्तरी भाग में - मेसाचुसेट्स, न्यू हैम्पशायर, रोड्स द्वीप- ये पहाड़ी और बर्फीले क्षेत्र थे। अतः कृषि के लायक न थे। इंग्लैंड को यहां से मछली और लकड़ी प्राप्त होती थी।
2. मध्य भाग में - न्यूयार्क, न्यूजर्सी, मैरीलैंड आदि थे। इन क्षेत्रों में शराब और चीनी जैसे उद्योग थे।
3. दक्षिणी भाग में - उत्तरी कैरोलिना, दक्षिणी कैरोलिना, जॉर्जिया, वर्जीनिया आदि थे। यहां की जलवायु गर्म थी। खेती के लिए उपयुक्त इस क्षेत्र में अनाज, गन्ना, तम्बाकू, कपास और बागानी फसलों का उत्पादन होता था।

इन उपनिवेशो में 90% अंग्रेज़ और 10% डच, जर्मन, फ्रांसीसी, पुर्तगाली आदि थे। इस तरह यह पश्चिमी दुनिया (यूरोप के विभिन्न देश के निवासी) तथा नई दुनिया (धार्मिक सामाजिक वातावरण भिन्न, मिश्रित संस्कृति) दोनों का हिस्सा था।

2.1.2 क्रांति से पूर्व अमेरिका

2.1.3 यूरोपियों के अमेरिका में बसने का कारण

- ✓ धार्मिक कारक - यूरोप में धर्मसुधार आंदोलन > प्रोटेस्टेंट धर्म का प्रचार > धर्म युद्ध तथा जेम्स प्रथम और चार्ल्स प्रथम की धार्मिक असहिष्णुता की नीति > अमेरिका प्रवास

- ✓ आर्थिक कारक – औद्योगिकीकरण के साथ साथ इंग्लैण्ड भी स्पेन की तरह उपनिवेश (कच्चा माल का आपूर्तिकर्ता एवं बने माल का बाजार) बनाकर धन कमाना चाहता था। ब्रिटेन में बहुत किसान भूमिहीन हो गए और वे अमेरिका जाकर आसानी से मिलने वाली भूमि को साधारण मूल्य पर खरीदना चाहते थे। भूमिहीन कृषकों के साथ-साथ भिखारियों एवं अपराधियों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही थी। अतः उन्हें अमेरिका भेजना उचित समझा गया। उसी प्रकार आर्थिक कठिनाइयों से त्रस्त लोगों को ब्रिटिश कंपनियां अपने खर्च पर अमेरिका ले जाती और उनसे मजदूरी करवाती।

2.1.4 अमेरिकी क्रांति के कारण

स्वतन्त्रता की चेतना :

- ✓ **जातीय / नृजातीय समानता** – ब्रिटिश और अमेरिकी दोनों ही मूल रूप में अंग्रेज़ ही थे, स्वतन्त्रता, समानता से परिचित थे,
- ✓ **सामाजिक भिन्नता** - इंग्लैंड (सामंतवादी, रुढ़िवादी और कृत्रिम) जबकि अमेरिका (जनतंत्रात्मक, मौलिक और आदर्शवादी)
- ✓ **आरंभ में ब्रिटिश सरकार का सीमित हस्तक्षेप** – गौरवशाली क्रांति (रक्तहीन क्रांति) 1688 > राजतंत्र एवं संसद के बीच निरंतर संघर्ष > योग्य नेतृत्व एवं निरंतर संपर्क का अभाव
- ✓ **धार्मिक मतभेद** – रोमन कैथोलिक (ब्रिटिश) बनाम प्रोटेस्टेंट (अमेरिकी) संघर्ष
- ✓ **सरकारी पदों पर दोषपूर्ण नियुक्ति** - उच्च सरकारी पदों पर केवल इंग्लैंड निवासी ही नियुक्ति के योग्य

दोषपूर्ण शासन :

- ✓ **राजनैतिक कारक** - शासन संचालन गवर्नर के द्वारा, गवर्नर की परिषद के सदस्य विशेष लोगों द्वारा चुने जाते थे जिन्हें कानून बनाने का अधिकार तो था परंतु गवर्नर उनके निर्णयों को बदल सकता था